अकतूबर २०१२

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

कॉपीकॅट

कॉपीकेट

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रो,

मम्मी मुझे मेरे फ्रेन्ड के जैसे जूते दिलाओ न, देखो मैंने ऐश्वर्या रॉय जैसे बाल कटवाए। मुझे भी सचिन तेंदुलकर जैसा बेट लेना है।

ओहोहो! हमेशा दूसरों की ही नकल! अपने में जो काबिलीयत है, उसे साइड पर करके दूसरे क्या करते हैं, कैसे करते हैं, वैसा करने में अपनी कितनी शक्ति खर्च हो जाती होगी? और बदले में क्या मिलता है? किसी ने हार पहनाया या किसी ने मेडल दिया? कुछ भी नहीं? तो फिर ऐसी नकल करने में क्यों समय बिगाड़ें?

तो आइए, इस अंक में परम पूज्य दादाश्री के पास से कुछ सच्ची समझ प्राप्त करें, ताकि दूसरों की नकल करने से बचें और करनी हो तो किसकी करनी चाहिए जिससे उसका फ़ायदा मिले, वह भी जान लें।

- डिम्पल मेहता

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं...१
बिना सोचे की गई नक़ल का परिणाम...२
यह तो नई ही बात!...४
नक़ल नहीं, असल ही चाहिए...५
मीठी यादें...९
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ...१०
पूज्य श्री के साथ बच्चे...१२
मनपसंद वार्ता...१३
चलो खेलें.....१४
कॉलाज वर्क स्पर्धा...१६

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ६
अखंड क्रमांक :६
अकतूबर २०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं

"नकल करने से तो अंदर की पूंजी भी चली गई।"

ज़िंदगी में किसी की भी नकल नहीं करनी चाहिए। कम अक्लवाला ही नकल करता है और दुःखी होता है। अपने को तो नकल नहीं असल चाहिए। नकल करके जीना अच्छा या असल में? नकल कैसी? अपने हिंदुस्तान के लोग तो किसीकी भी नकल करते ही नहीं। अन्य देश अपनी नकल करें, ऐसा होना चाहिए।

लेकिन सब बदल गया है। मैं क्या बोलूँ तो हित और क्या करूँ तो हित, मैं क्या जानूँ तो हित, उसका पता ही नहीं है। इसमें-उसमें, सबमें नकल करने में माहिर हो गए हैं! अभी तो सोने में भी नकल, चलने में भी नकल। अरे! बैठने में भी नकल ही करते हैं न! ये बच्चे एक-दूसरे की नकल करते हैं। नया पेन्ट पहनकर आईने में देखते रहते हैं। "अरे,आईने में क्या देखता है?" तुझे देखने की किसीको भी फुरसत नहीं है। तुझमें क्या देखना है? यह किसकी नकल करते हो, वह तो देखो! ऐसा है ये जगत्! इसे जीवन ही कैसे कहेंगे?

नकल करने से तो अंदर की पूंजी भी चली गई। वर्ना एक-एक हिंदुस्तानी में अनंत शक्ति है! लेकिन सब उल्टी खर्च हो रही है। यह शक्ति कैसे खर्च कर दी? ये भाई आई.ए.एस (उच्च गर्वमेन्ट ऑफिसर) कर रहे हैं, तो मैं उन्हें देखकर तय करूँ कि मुझे भी आई.ए.एस. बनना है। ऐसे नकल कर-करके शक्ति खर्च कर दी। यह तो जब "ज्ञानीपुरुष" मिलें तो शक्ति सही दिशा में जाकर काम आए। नकल तो मेरी करो न! यह क्यों नहीं आती?

प्रश्नकर्ता : आप जैसे बन जाएँ, ऐसा कीजिए न!

दादाश्री : नकल करो कि ये दादाश्री क्या कर रहे हैं। इतना ही नकल करते रहो न! इतनी नकल आए तो भी बहुत हो गया। तब मैं जानूँ कि अक्लमंद हो।

नकल मतलब दादा के कहे अनुसार आज्ञा में रहो तो हो गया, पूरा हो गया!

बिना सोचे की गई नक़ल का परिणाम

वर्षों पुरानी बात है। सुशीला नगरी में मुंजालमुनि नाम के ऋषिमुनि निवास करते थे। कुटीर के पास उन्होंने एक गुरुकुल की स्थापना की थी।

गुरुकुल में एक विशाल वटवृक्ष था। उस वटवृक्ष के नीचे बैठकर मुंजालमुनि रोज़ अपने शिष्यों को उपदेश देते थे। एक दिन एक बिल्ली मुनि के पैर के पास आकर बैठ गई। मुनि ने उस बिल्ली को थोड़ा दूध पिलाया। इस तरह बिल्ली को रोज़ मुनि के पास आने की आदत पड़ गई। मुनि को भी बिल्ली का साथ अच्छा लगने लगा और उन्होंने उस बिल्ली को पाल लिया। वे साधना करते या उपदेश देते, बिल्ली हमेशा मुनि के आसपास ही रहती।

कुछ सालों बाद मुनि की मृत्यु हो गई। शिष्यों को उलझन हुई, "बिल्ली का क्या करें?" शिष्यों को भी बिल्ली की हाज़िरी की आदत पड़ गई थीं। इसलिए सब ने तय किया कि बिल्ली भी गुरुकुल में ही रहेगी। इस तरह सालों बीत गए। सभी शिष्य, पट शिष्य के मार्गदर्शन में अपनी प्रगति कर रहे थे।

एक दिन पास के गाँव से आनंदमुनि और उनके शिष्य, सुशीला नगरी में आए। मुंजालमुनि के शिष्यों की कुशलता और ज्ञान की प्रगति देखकर आनंदमुनि बहुत प्रभावित हुए। गुरुकुल में मुनि ने उस बिल्ली को घूमते-फिरते देखा। यह बिल्ली मुंजालमुनि के समय से हैं, यह जानकर उनके मन में विचार आया, "इन लोगों की कुशलता और ज्ञान की प्रगति का रहस्य ये बिल्ली ही होनी चाहिए। अगर मुझे भी उनकी तरह कुशल होना हो, तो ऐसी ही एक बिल्ली मुझे भी पालनी चाहिए।"

इस तरह आनंदमुनि भी अपने गुरुकुल के लिए एक बिल्ली ले आए। धीरे-धीरे यह बात दूसरे गाँवों में भी फैलने लगी। "ध्यान और साधना में बिल्ली की आवश्यकता" के विषय पर चर्चा होने लगीं। सभी एक दूसरे की नकल करके बिल्ली रखने लगे।

इस तरह एक पीढ़ी निकल गई। बिल्ली की आवश्यकता का मुख्य कारण तो मुंजालमुनि के आश्रमवाले भी भूल गए। वहाँ भी एक बिल्ली की मृत्यु होने पर दूसरी बिल्ली लाई जाती थी।

थोड़े समय के बाद ऐसा हुआ कि उस आश्रम के प्रमुख विवेकमुनि को बिल्ली के बालों से एलर्जी हो गई। इसलिए उन्होंने बिल्ली को निकाल देने का आदेश दिया। सभी शिष्यों ने बहुत विरोध किया। मुनि विद्वान थे। उन्होंने शिष्यों को समझाया, "इस बात में कोई तथ्य नहीं है कि बिल्ली के कारण एकाग्रता बढ़ती है या बिल्ली से साधना में मदद मिलती है। यह तो कुछ बिना अक्लवाले लोगों ने एक-दूसरे की नकल की, और ऐसी मान्यता लोगों के मन में दृढ कर दी।"

विवेकमुनि अनुभवी और विद्वान थे। इसलिए उनकी बात शिष्यों को समझ में आई। शिष्यों ने बिल्ली को आश्रम से निकाल दिया।

धीरे-धीरे यह बात आसपास के गाँवों में फैल गई। बिल्ली की देख-रेख से थके हुऐ (परेशान) लोग फिर एक दूसरे की नकल करके बिल्ली को अपने आश्रम और गुरुकुल से निकालने लगे। और सभी गाँवों में 'बिल्ली की गैरहाज़िरी में होनेवाले ध्यान का महत्व' की चर्चा होने लगीं।

यह बात विवेकमुनि ने सुनी। यह सुनकर वे मुस्कुराए। उस शाम को शिष्यों को उपदेश देते हुए उन्होंने कहा, "अपनी कम अक्ल के कारण ही हम दूसरों की नकल करते हैं। नकल के कारण ही हम अपने जीवन में ऐसी कितनी ही 'बिल्लियाँ' पालते होंगे। अगर बिल्ली ही प्रगति करवाती हो, तो नियम संयम की कोई ज़रूरत ही नहीं रही न! लेकिन......"

अभी वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था, कि वहाँ एक बिल्ली कूदकर विवेकमुनि के पैर के पास आकर बैठ गई, "म्याऊँ....." करके धीमी आवाज़ की और सभी शिष्य हँस पड़े।

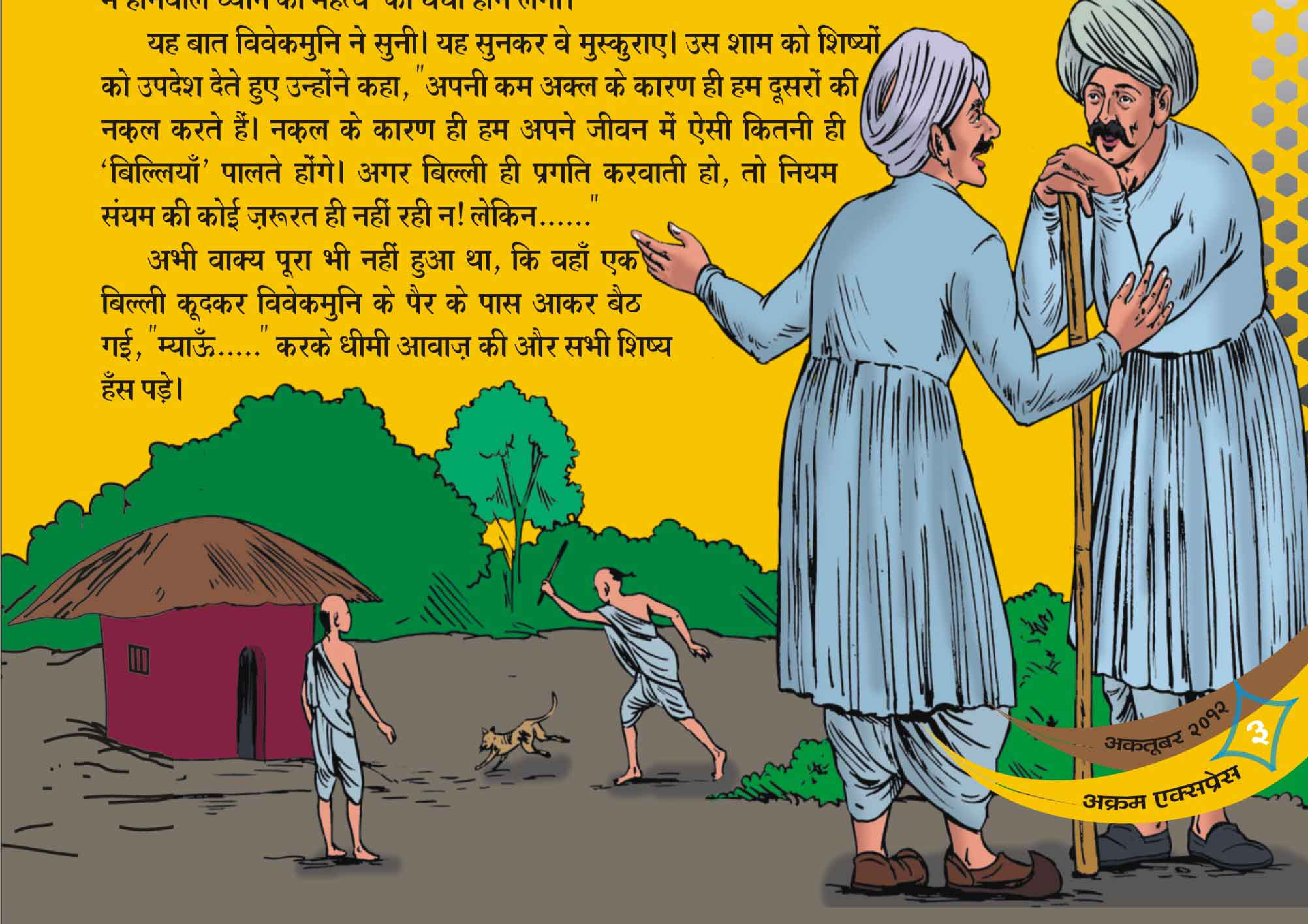

नकल तो बंदर करते हैं। मनुष्य नकल नहीं करते, असल (अपना विशेष) करते हैं।
यह तो नई
अक्ल तो किसे कहेंगे की जिसने कभी किसीकी नकल की ही नहीं हो, उसे।

जो दूसरे की नकल
कर रहा हो, उसकी
हम नकल करें तो
वह मूर्खता ही
कहलाएगी न!

ही बात!

अपने हिताहित का भान नहीं है।
हिताहित का भान मतलब, मैं
क्या करूँ तो सुखी रहूँगा और
क्या करूँ तो दुःखी रहूँगा?
हिताहित के भान के साथ
दूसरे के जैसा करे, उसे अनुकरण
कहते हैं और बगैर भान
के करे तो उसे नकल कहते हैं।

नक़ल नहीं, असल ही चाहिए

लेकिन स्कूल में कुछ खास बच्चों से मैं बहुत प्रभावित था। स्कूल के वे 'पोप्युलर' बच्चे कहलाते थे। उनके साथ दोस्ती करने, उनके ग्रुप में शामिल होने के लिए मैं उनकी नकल करने लगा।
उन बच्चों ने मुझे अपनाया तो सही, लेकिन मैंने मेरा असली व्यक्तित्व खो दिया। मैं उन के जैसे कपड़े पहनने लगा। उनकी तरह और उनकी ही स्टाइल में बातें करने लगा। अरे! बोलने, चलने, खाने में सभी बातों में उनकी नकल होने लगी।
इतना ही नहीं, केरियर भी मैंने नकल करके ही पसंद किया। उन लोगों ने एम.बी.ए. करना तय किया, तो मैंने भी उनकी नकल करके एम.बी.ए. करने का निर्णय लिया।
लेकिन नकल करने से सफलता थोड़े ही मिलती है? जॉब पर मुझे अच्छा ही नहीं लगता था, मेरा दम घुटता था और अंत में इस जॉब से मुझे निकाल दिया।

आज अलमारी साफ करते समय यह पुराना एल्बम मिला। एल्बम देखकर लगा कि 'पहलेवाला अतीत' तो न जाने कहाँ खो गया!
दोस्त मुझे भरोसा है कि पुराना अतीत कहीं भी नहीं खोया। तुझे तेरी काबिलीयत की पहचान नहीं थी, इसलिए तूने नक़ल करके अपनी शक्तियाँ खर्च कर दीं और समय बिगाड़ा। लेकिन अभी भी कुछ देर नहीं हुई है।
मतलब?
मतलब यह कि तेरे चाचाजी सच ही कहते थे। तेरी फोटोग्राफी में जादू है। बोल, सोमवार से मेरी कंपनी में काम करना है?
अतीत ने विनय की कंपनी में नौकरी ले ली और खूब सफल फोटोग्राफर बना। उसके बाद उसने अपने जीवन में और प्रोफेशन में कभी किसी की नकल नहीं की।

मीठी यादें

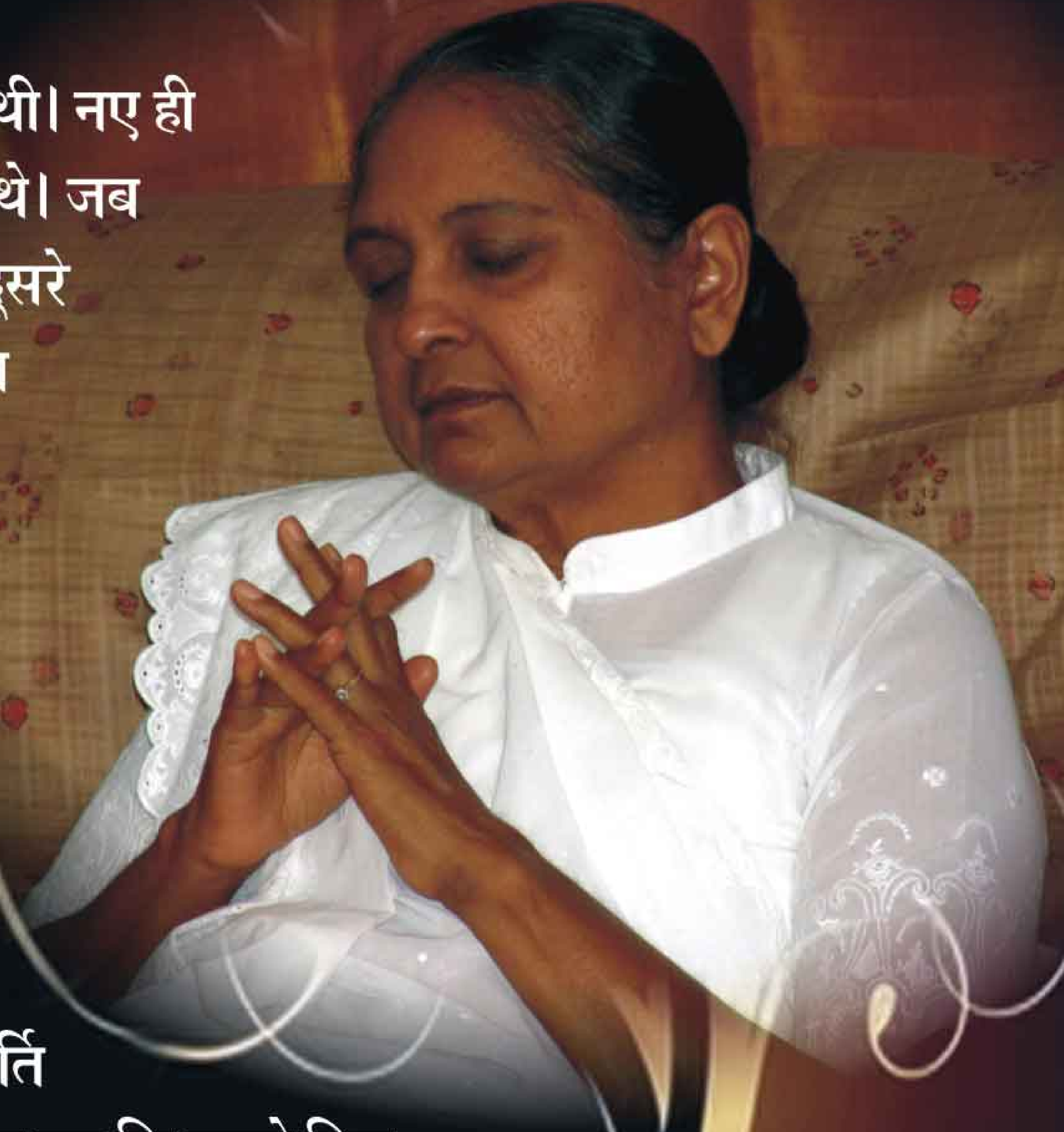

अमेरिका से एक महात्मा बहन किसी प्रसंग के लिए मुंबई आई थी। नए ही महात्मा थे, फिर भी अपने शहर के सेंटर पर खूब सेवा में लग गए थे। जब पूज्य दीपकभाई मुंबई आए तब उनसे कहा, "तुम्हारे और एक दूसरे महात्मा के लिए नीरु माँ ने ११ इंच की मूर्ति लेकर रखी है। आप अमेरिका जाने से पहले घर से लेकर जाना।" यह सुनकर महात्मा तो बहुत खुश हो गए।

वे जब मूर्ति लेने गई, तब सिर्फ एक ब्रह्मचारी बहन घर पर थीं। उन महात्मा को देखकर बहन ने तुरंत दो मूर्ति निकाल कर दे दी। मूर्ति लेते समय उन महात्मा बहन को दूसरी एक बहन याद आई, जो सेवा में उनकी मदद करती थीं। उन्होंने पूछा, "उनके लिए मूर्ति ले सकती हूँ?" ब्रह्मचारी बहन ने नीरु माँ को फोन करके पूछा। नीरु माँ ने 'हाँ' कहा, इसलिए उनके लिए दूसरी एक मूर्ति निकाल कर दी। तब तक तो उन बहन को दूसरे भी दो महात्मा याद आ गए कि उनके लिए ली और उनके लिए नहीं लूँगी तो उन्हें बुरा लगेगा। ऐसा कहकर उन दोनों के लिए भी मूर्तियाँ ले ली।

अब ये महात्मा नए थे, इसलिए उन्हें यह मालूम नहीं था कि सभी मूर्तियाँ दूसरे महात्माओं द्वारा दिए गए ऑर्डर की हैं और उनके पैसे देने होते हैं। इसिलए उन्होंने तो अपने नज़दीक के सभी महात्माओं के लिए मूर्तियाँ निकलवाई। ऐसे करते-करते उन्होंने सात मूर्तियाँ लीं। ब्रह्मचारी बहन भी, महात्मा नए हैं और उनका दिल न दुःखे, इसलिए कुछ बोली नहीं और दे दीं।

बाद में जिन्होंने मूर्ति ऑर्डर की थीं उन्हें मूर्ति मिली ही नहीं। इसलिए उनके लिए दूसरी मूर्तियाँ ऑर्डर करनी पड़ीं और उन सात मूर्तियाँ के पैसे घर से देने पड़े। लेकिन नीरु माँ ने यह सब इतना शांति से पूरा किया जैसे कुछ हुआ ही न हो!

सालों बाद जब उन महात्मा को अपने इस घोटाले का पता चला, तब उन्हें अपने ऐसे व्यवहार के लिए बहुत शर्म आई कि उन्हें मूर्ति की क़ीमत जानने की और चुकाने के बारे में ज़रा भी समझ नहीं आई। और साथ ही साथ नीरु माँ के लिए अहो भाव हुआ कि इतने ज्यादा पैसे (लोगों के पैसे) उन्होंने चुपचाप चुका दिए और उन्हें पता भी नहीं चलने दिया। इतना ही नहीं, लेकिन हर साल नीरु माँ अमेरिका जाते फिर भी इस बात का कभी उल्लेख तक नहीं किया और उनके प्रेम में भी कोई फ़र्क नहीं पड़ा। यह सब याद आते ही महात्मा बहन तो नीरू माँ के प्रति श्रद्धा से एकदम झुक गई।

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

श्री सिंह अणगार भगवान महावीर के अनुरागी शिष्य थे। एक दिन वे एकांत में जंगल में एक वृक्ष के नीचे ध्यान कर रहे थे। वहाँ दो व्यक्ति, भगवान महावीर पर गौशाळा (भगवान महावीर के शिष्य) द्वारा तेजोलेश्या (जिससे शरीर में आग जैसी जलन उत्पन्न होती है) डालनेवाली बात कर रहे थे।

पहले व्यक्ति ने कहा, "जब भगवान पर गौशाळा ने तेजोलेश्या डाली, तब भगवान के शिष्य गौशाळा को क्यों नहीं रोक पाए?"

तब दूसरे ने जवाब दिया, "भगवान की आज्ञा थी कि सभी को गौशाळा से दूर रहना है। फिर भी जिन्हें भगवान महावीर पर अनन्य प्रेम था, ऐसे दो अणगार रोकने से नहीं रुके और बीच में कूद पड़े और तेजोलेश्या से दोनों जीते जी जलकर मर गए। तेजोलेश्या भगवान के शरीर में प्रवेश न कर सकी और सीधी गौशाळा के शरीर में फैल गई। लेकिन तेजोलेश्या की गर्मी से भगवान के हर एक अंग में जलन हो रही थी। भगवान की यह पीड़ा देखकर सभी शिष्य व्याकुल हो गए थे।"

यह बात श्री सिंह अणगार ने ध्यान करते हुए सुनी। उनके हृदय में अत्यंत दुःख हुआ। भगवान को कितनी पीड़ा हो रही होगी? उसकी कल्पना से ही उनकी आँख में से आँसू बहने लगे।

थोड़ी देर बाद दूसरे दो राहगीर भी उस वृक्ष के नीचे आकर बैठे और यही बात करने लगे कि, "तेजोलेश्या से भगवान को खून के दस्त हो रहे हैं!"

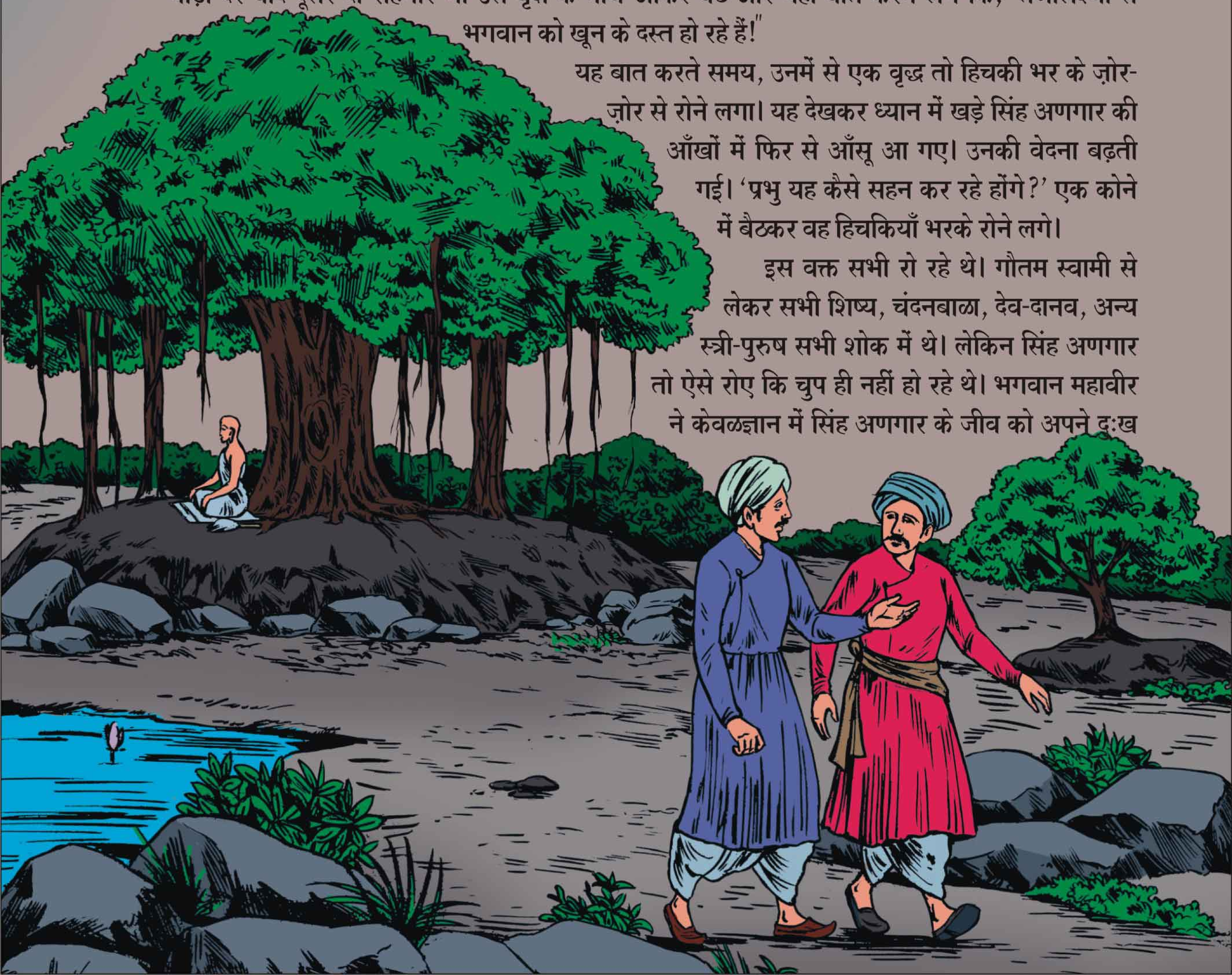

यह बात करते समय, उनमें से एक वृद्ध तो हिचकी भर के ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। यह देखकर ध्यान में खड़े सिंह अणगार की आँखों में फिर से आँसू आ गए। उनकी वेदना बढ़ती गई। 'प्रभु यह कैसे सहन कर रहे होंगे?' एक कोने में बैठकर वह हिचकियाँ भरके रोने लगे।

इस वक्त सभी रो रहे थे। गौतम स्वामी से लेकर सभी शिष्य, चंदनबाळा, देव-दानव, अन्य स्त्री-पुरुष सभी शोक में थे। लेकिन सिंह अणगार तो ऐसे रोए कि चुप ही नहीं हो रहे थे। भगवान महावीर ने केवळज्ञान में सिंह अणगार के जीव को अपने दुःख

के लिए अत्यंत तड़पता देखा। तुरंत उन्होंने गौतम स्वामी को बुलाया और सिंह अणगार को लेकर आने को कहा।

भगवान को देखकर सिंह अणगार की वेदना बढ़ गई। भगवान ने अणगार को नज़दीक बुलाया और मधुर वाणी में कहा, "सिंह! तूने लोगों के मुँह से सुना है कि, मेरी छः महीने में मृत्यु हो जाएगी, क्या लेकिन ऐसा हो सकता है? हमेशा आयुष्य पूरा होने के बाद ही तीर्थकरों का निवार्ण होता है।"

सिंह अणगार ने कहा, "प्रभु आपके लिए नहीं लेकिन मेरे मन की शांति के लिए आप औषधि का सेवन कीजिए। यह पीड़ा मैं एक पल के लिए भी नहीं देख सकता।"

सिंह मुनि के ऐसे आग्रह को देखकर प्रभु बोले, "इस गाँव में रेवती नाम की श्राविका ने मेरे लिए कद्दू का कटाह (औषधि की तरह लेते हैं) बनाया है। लेकिन दूसरा उसके घर के लिए बिजोरा का कटाह (औषधि की तरह लेते हैं) बनाया है वह तू ले आ। मैं दवाई की तरह उसे ले लूँगा, जिससे तुझे शांति हो जाएगी।"

सिंह अणगार नाचने लगे। उन्होंने विनयपूर्वक रेवती से वंदन करते हुए कहा, "हे श्राविका, आपने अपने लिए जो औषधि बनाई है, वह प्रभु के लिए दीजिए। उसकी हमें ज़रूरत है।"

रेवती को आश्चर्य हुआ कि भगवान के सिवाय यह गुप्त बात कोई भी नहीं जान सकता। उन्होंने तुरंत ही आनंदपूर्वक वह औषधि सिंह अणगार को दे दी। देवों को भी यह देखकर आनंद हुआ। सिंह अणगार ने तुरंत ही भगवान को उस औषधि का आहार करवाया और भगवान का शरीर तेजोलेश्या की पीड़ा से थोड़े ही समय में रोग मुक्त हो गया। शोक मग्न बने सभी जीव आनंद विभोर हो गए।

सिंह अणगार की आँखों से हर्ष के आँसू बहने लगे और भगवान के सामने वे मुस्कुराने लगे।

और इस तरह भगवान की तेजोलेश्या के कारण उतपन्न हुई वेदना का अंत आया।

पूज्य श्री के साथ बातें

प्रश्नकर्ता :- मैं कोई भी निश्चय करता हूँ, उसका पालन नहीं कर सकता।

पूज्यश्री :- किसका निश्चय करते हो तुम?

प्रश्नकर्ता :- सबको पॉज़िटिव दृष्टि से देखने का। उसका पालन नहीं कर सकता।

पूज्यश्री :- तो फिर क्या हो जाता है?

प्रश्नकर्ता :- उसके बाद नेगेटिव विचार ही आ जाते हैं।

पूज्यश्री :- सामनेवाले के लिए?

प्रश्नकर्ता :- हाँ।

पूज्यश्री :- तो फिर प्रतिक्रमण करते हो न?

प्रश्नकर्ता :- हाँ

पूज्यश्री :- फिर दोबारा निश्चय करना कि, 'हे दादा भगवान, यह नेगेटिव दिख गया माफ़ी माँगता हूँ?' मैं पॉज़िटिव देखूँ ऐसी शक्ति दीजिए।' फिर शक्ति माँगनी है। जितनी बार भूल हो, उतनी बार सुधार लेनी है। इससे धीरे-धीरे पुराना कचरा खत्म हो जाएगा और नई शक्ति प्रकट हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता :- दीपकभाई, मुझे किसीका नेगेटिव जल्दी दिख जाता है। पॉज़िटिव जल्दी नहीं दिखता।

पूज्यश्री :- जब हमारे पास फ्री टाइम हो, तब उस व्यक्ति के पॉज़िटिव लिखना। एक नेगेटीव के सामने दो पॉज़िटिव लिखना। इससे आपके अंदर सच्ची शक्ति उतपन्न होगी। और जितने नेगेटिव दिखें उसकी माफ़ी माँग लेना कि, "हे दादा भगवान, ऐसा उल्टा देखा उसकी माफ़ी माँगता हूँ। मुझे पॉज़िटिव दिखे ऐसी शक्ति दीजिए।" इसमें क्या है कि अपना व्यवहार वह प्रकृति का भरा हुआ माल है और आज की समझ हमें बदल देनी हैं कि यह मन बताता है वह गलत है। जैसे हम खाना खा रहे हों और पास में कोई दूसरा खाना खा रहा हो, तो हम उसकी थाली में थोड़े ही हाथ डालेंगे? मन में होता हो कि उसकी थाली में लड्डू है और अपनी थाली में नहीं, तो थोड़े ही हम हाथ डालेंगे?

प्रश्नकर्ता :- नहीं।

पूज्यश्री :- मन तो बताएगा उससे क्या, आप तो समझते हैं न कि, कोई अविवेक नहीं करना है, किसीको दुःख नहीं देना है। यह मन तो अलग-अलग सब बताएगा लेकिन हम अलग और मन अलग। मन सब उल्टा बताए तो हमें सीधा कर देना है। मन बताए उल्टा, 'ये बहुत झूठा आदमी है।' तो कहना कि 'नहीं, दूसरों के लिए अच्छा है। हमें उल्टा नहीं देखना चाहिए।' हमें मन की बात का विरोध करना है। धीरे-धीरे यह कचरा और नेगेटिविटी चली जाएगी। दादा भगवान क्या कहते हैं कि, जीवन में एक सिद्धांत रखना कि, 'मुझे किसीका नेगेटिव देखना ही नहीं है। हमेशा पॉज़िटिव में ही रहना है।' कोई नेगेटिव बात करे तो उसे कहना कि मुझे इसमें रस नहीं है। पॉज़िटिव रहेंगे तो नेगेटिविटी का सब कचरा निकल जाएगा। हमें विरोध करना है और शक्ति माँगनी हैं कि 'हे दादा भगवान! मुझे पॉज़िटिव में रहने की शक्ति दीजिए।'

मनपसंद वार्ता

दीपकभाई, मैंने दादा का ड्रॉइंग बनाया है। देखिए न!
अरे वाह, तेरी ड्रॉइंग तो बहुत अच्छी है।
तुने इतनी अच्छी ड्रॉइंग कैसे बनाइ?
यह तो मैंने आपको याद कर-करके बनाया है। आप दादा के बेटे हों, ऐसे ही लगते हैं।
हैं न जूनियर दादा।

चलो खेलें.....

चार १ को और तीन २ को खाली गोलों में इस तरह रखो कि कोई भी लगातार ३ गोलों के गुणाकार को ३ से भाग ना सकें।

१

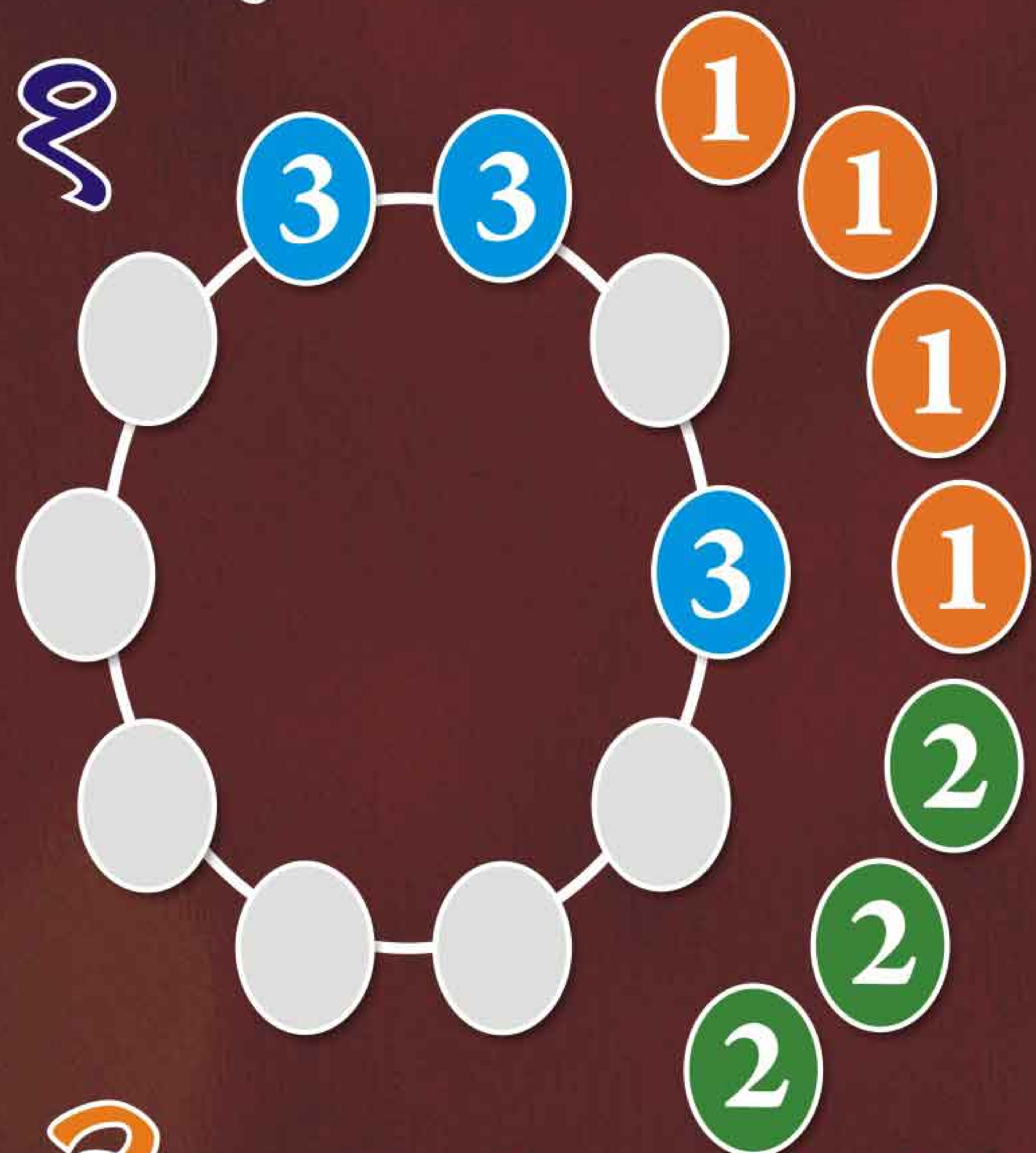

२

नीचे दिए गए चित्र में रास्ता ढूँढ निकालो।

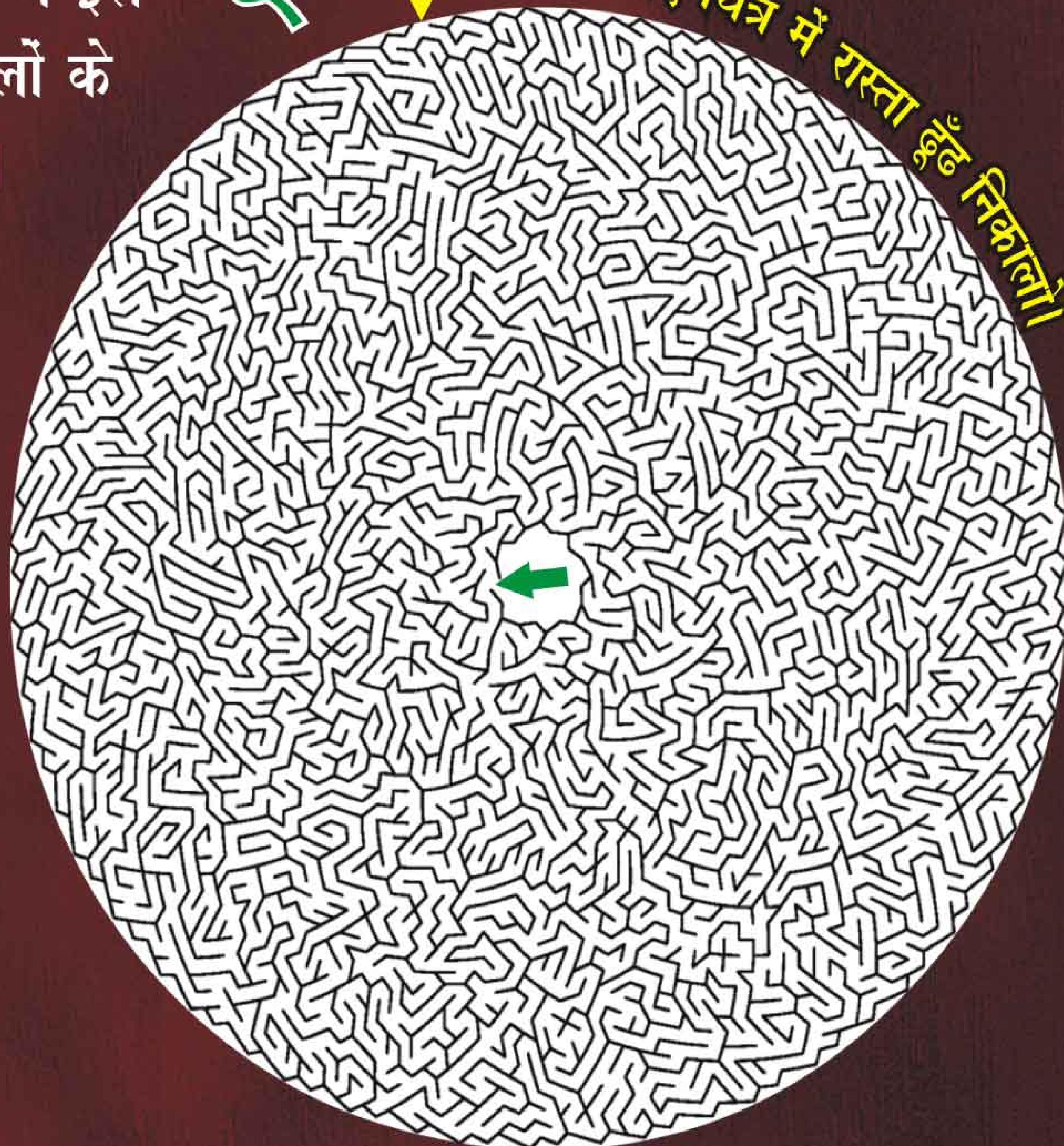

३

नीचे दिए गए ४*४ के चोरस में, पास में दिए गए १६ आकार इस तरह रखो कि कोई एक रंग या आकार एक दूसरे के पास में न आए।

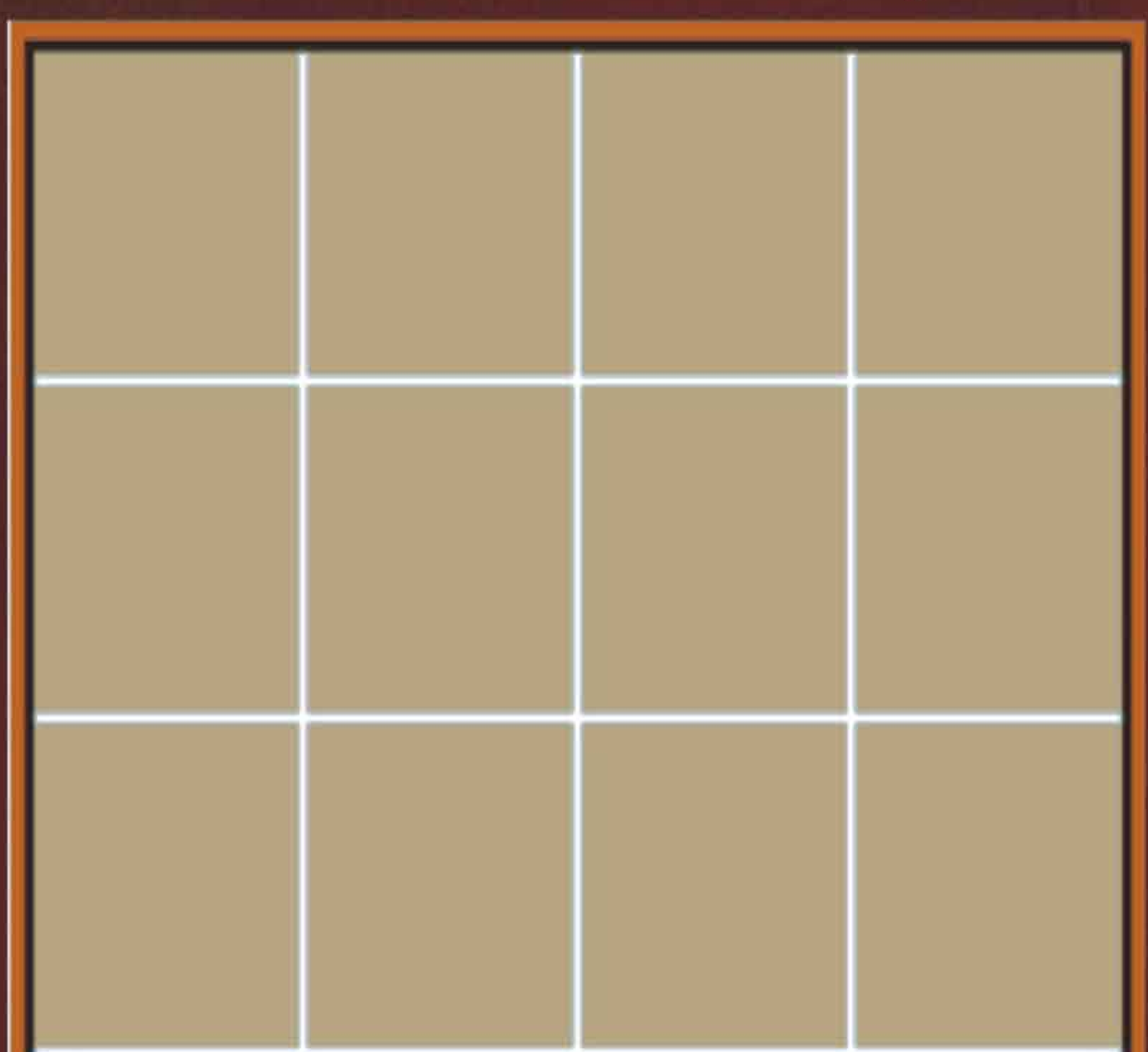

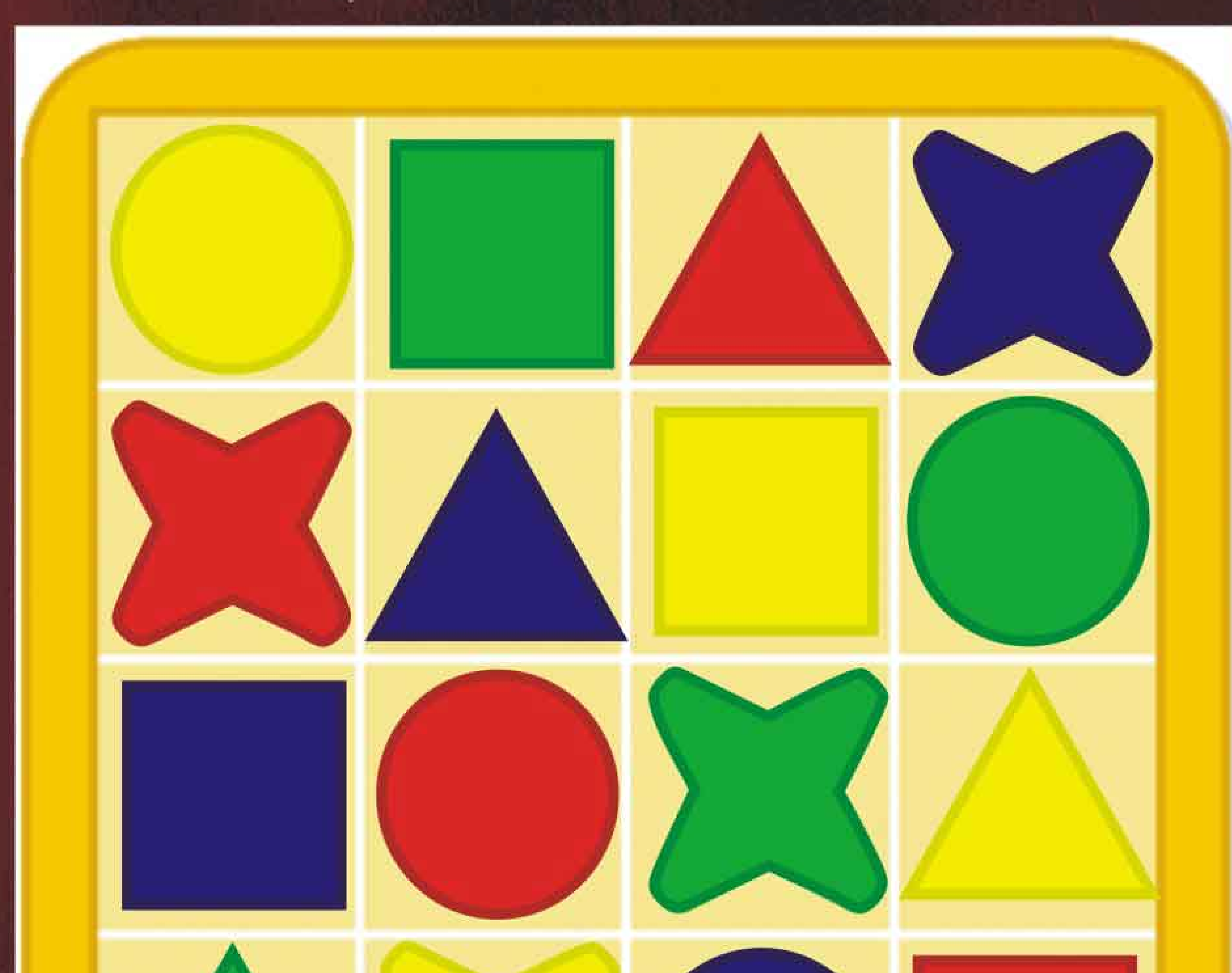

४ यहाँ ३ कप दिए गए हैं। लाल, हरा और नीला। एक में सिक्का, एक में शंख और एक में पत्थर है। लाल कप की बायीं ओर हरा कप है। पत्थर की बायीं ओर सिक्का है। शंख की दायीं ओर नीला कप है। नीले कप की दायीं ओर पत्थर है। तो सिक्का कौन-से कप में है....?

५ नीचे की आकृत्ति में से सिर्फ ३ सलाईयाँ उठाकर दूसरी जगह इस तरह रखो कि एक समान ३ चोरस बनें।

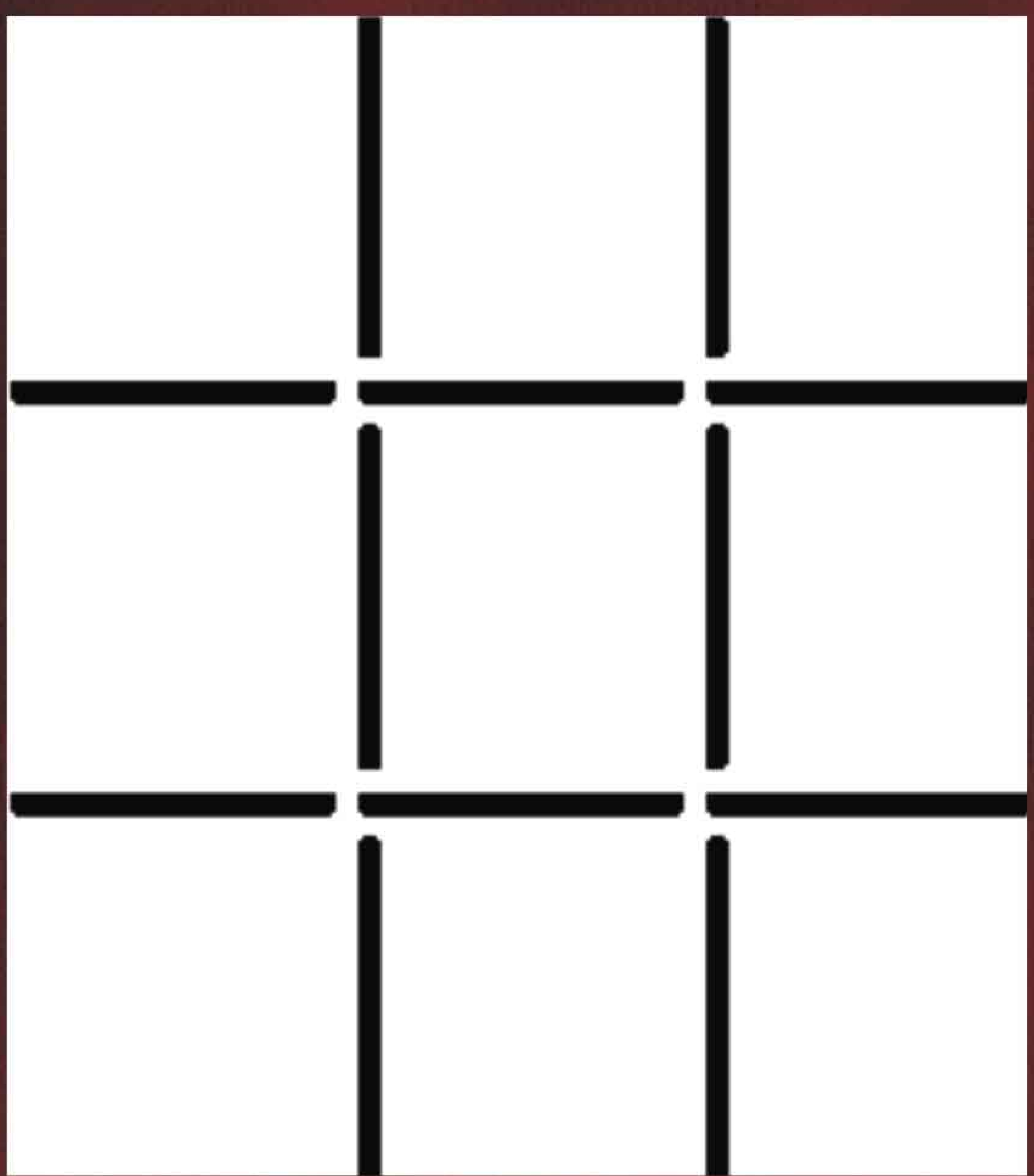

६ नीचे दिए गए चित्र में एक आकृत्ति छुपी हुई है, उसे ढूँढो।

कॉलाज वर्क स्पर्धा

दोस्तों, वेकेशन शुरू हो गया है न? आओ,
अक्रम एक्सप्रेस की कॉलाज वर्क स्पर्धा में भाग लो।

स्पर्धा के नियम :-

ग्रुप
- ७ से ९ वर्ष
- १० से १२ वर्ष
- १३ से १५ वर्ष

१. कॉलाज बनाने के लिए उपयोग में लेने की चीज़ें....

ग्रुप -१ - क्राफ्ट पेपर, अखबार, मैगज़ीन, चार्ट पेपर या कपड़ा।

ग्रुप २ और ३ - तुम्हारा कॉलाज बनाने के लिए उपयोग में लेने की चीज़ें, माचिस, माचिस का बोक्स, स्ट्रो, सूखे ५ फूल, पत्ते, क्राफ्ट पेपर, अखबार, मैगज़ीन, प्लास्टिक, प्लास्टिक की चम्मच, चोकलेट का रेपर, फोइल, क्रेयोन या पेन्सिल के छिलके और कपड़े के टुकड़े।

२. तुम्हारा कॉलाज A-४ माप के कार्डबोर्ड पेपर पर बनाना होगा।

३. तुम्हारा कॉलाज या फोटोफ्रेम फेवीक्विक या फेविकोल से चिपकाना जिससे भेजते वक्त बिगड़ न जाए।

जिऑमेट्रिक कॉलाज ७ से ९ वर्ष
दृष्टांत देखकर तुम्हें पसंद हो ऐसे किसी भी एक जिऑमेट्रिक आकार पर कॉलाज बनाओ।

थीम कॉलाज १० से १२ वर्ष
दृष्टांत देखकर निम्न लिखित तुम्हें पसंद किसी भी एक थीम पर कॉलाज बनाओ। तुम्हारा कॉलाज सी-बीच, गार्डन या जंगल थीम पर बनाओ।

फोटोफ्रेम कॉलाज १३ से १५ वर्ष
दृष्टांत देखकर तुम्हारी पसंदीदा डिज़ाइन की फोटोफ्रेम बनाओ।

हर एक ग्रुप में से सबसे अच्छे पहले २ कॉलाज वर्क को इनाम दिया जाएगा। इनाम विजेता के घर पहूँचा दिया जाएगा। तुम्हारा कॉलाज वर्क हमें नवम्बर माह की १५ तारीख तक मिल जाना चाहिए। विजेताओं के नाम दिसम्बर के अंक में घोषित किए जाएँगे। तुम्हारा कॉलाज वर्क तुम्हारे पूरे नाम, उम्र, पते और फोटो के साथ निम्न लिखित पते पर भेज दो।

अक्रम एक्सप्रेस - कॉलाज वर्क स्पर्धा
बालविज्ञान विभाग, त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे, मु.पो.- अडालज,
जि. - गांधीनगर - ३८२४२१, e-mail: akramexpress@dadabhagwan.org

पहेलियों के जवाब

३

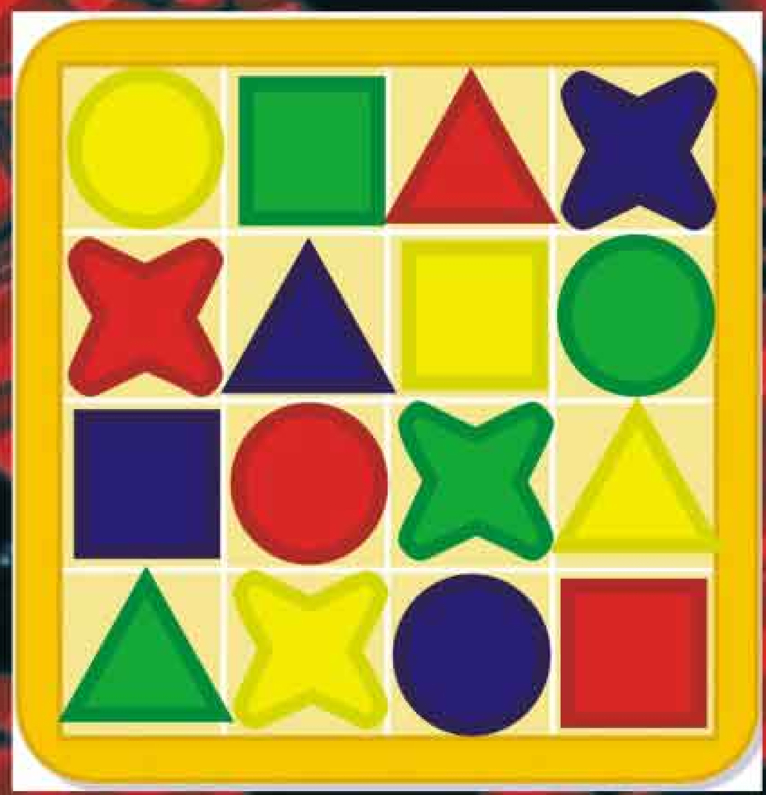

६

१

५

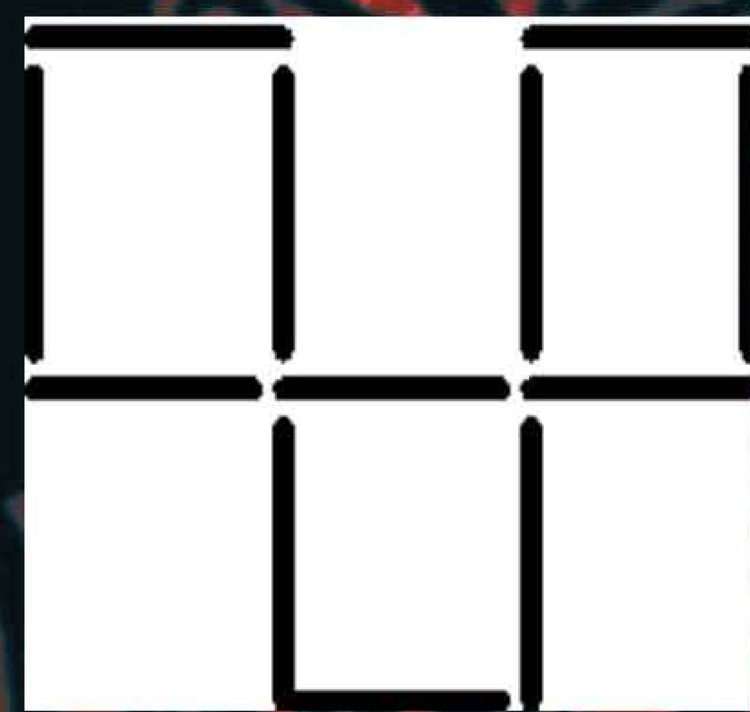

४ सिक्का हरा कप में है।

जुलाई २०१२ में सीमंधर सिटी में हुई खास NRI युवानों के लिए शिविर '1 STAR' की झलक

Akram Express

October 2012
Year : 1, Issue : 6
Conti. Issue No.: 6

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.